महेशपुर

रेण तट स्थित प्राचीन कलातीर्थ

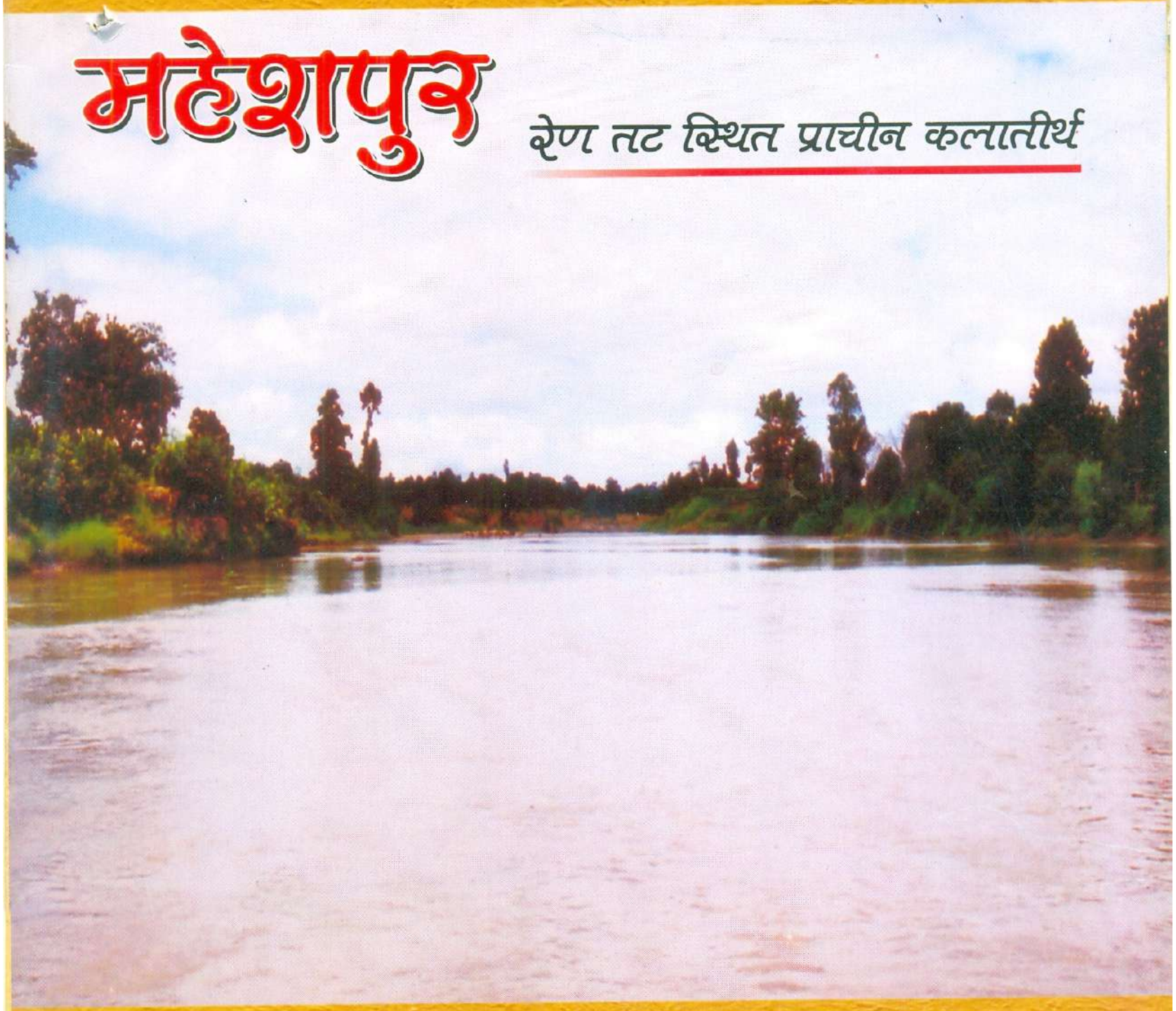

संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

महेशपुर

पाषाणयुगीन मानव संस्कृति के पदचाप और ऐतिहासिक काल के पुरावशेषों से समृद्ध सरगुजा जिले का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है। मौर्यकालीन नाट्यशाला और अभिलेख के लिए विख्यात रामगढ़ के सन्निकट रेण नदी के तटवर्ती क्षेत्र में 8वीं सदी ईसवी से 13वीं सदी ईसवी के मध्य कला संस्कृति का अभूतपूर्व उत्कर्ष हुआ। इस काल के स्थापत्य कला के भग्नावशेष महेशपुर और कलचा–देवगढ़ तक विस्तृत हैं। शैव, वैष्णव तथा जैन धर्म से संबंधित कलाकृतियां और प्राचीन टीलों की संख्या की दृष्टि से महेशपुर महत्वपूर्ण पुरातत्वीय स्थल है।

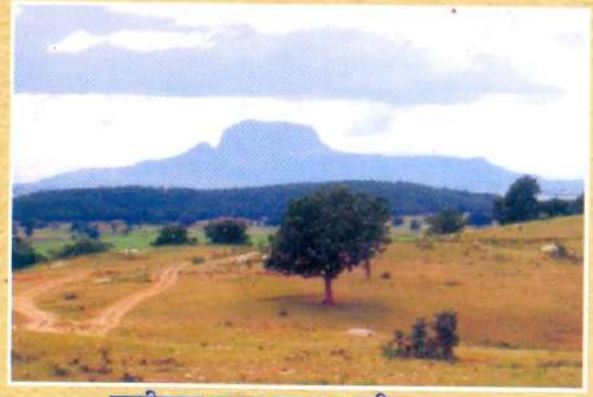

प्राचीनतम नाट्य शाला स्थली - रामगढ़

बिलासपुर–अंबिकापुर सड़क मार्ग पर स्थित महेशपुर, सरगुजा जिले के तहसील मुख्यालय उदयपुर से उत्तर पूर्व की ओर लगभग 12 कि.मी. की दूरी पर रेण नदी के तट पर स्थित है। अंबिकापुर से यह स्थल लगभग 45 कि.मी. की दूरी पर है और सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। यह भू–भाग भगवान राम के वनगमन मार्ग तथा वनवास अवधि की स्मृतियों से स्पंदित है। स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार जमदग्नि ऋषि की पत्नी रेणुका रेण नदी के रूप में प्रवाहित है। रेण नदी के उद्गम स्थल मतरिंगा पहाड़ से महेशपुर तक का वनाच्छादित क्षेत्र प्रागैतिहासिक काल और ऐतिहासिक काल के विविध पुरावशेषों को अपने अंक में समेटे हुये है।

रियासत कालीन प्रकाशित पुस्तकों में प्राचीन स्थल तथा शैव धर्म के आस्था स्थल के रूप में महेशपुर का उल्लेख है। ब्रिटिश पुराविदों तथा अन्वेषकों की दृष्टि से यह स्थल ओझल रहा है। वृहत सर्वेक्षण तथा उपलब्ध अवशेषों के आधार पर टीलों में दबे पुरासंपदाओं को प्रकट करने के उद्देश्य से महेशपुर में उत्खनन कार्य पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

प्रारंभिक उत्खनन दृश्य, बड़का देउर

महेशपुर के पुरातत्वीय धरोहरों के विस्तृत श्रृंखला को प्रकाश में लाने के लिए वर्ष 2008 में रेण नदी के किनारे स्थित टीले पर तत्पश्चात वर्ष 2009 में बड़का देउर नामक टीले पर किए गए उत्खनन से विभिन्न मंदिरों के अवशेष तथा प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। महेशपुर में उत्खनन से दक्षिण कोसल के ऐतिहासिक युगीन स्थापत्य कला पर विशेष प्रकाश पड़ा है।

मान. संस्कृति मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल के विशेष पहल से विभाग द्वारा जनजातीय बाहुल्य अंचल सरगुजा स्थित महेशपुर की पुरासम्पदा को उजागर करने के लिए महेशपुर में उत्खनन कार्य प्रारंभ किया गया, जिसके सार्थक परिणाम प्राप्त हुए हैं और जन चेतना विकसित हुई है। महेशपुर में वर्ष 2008 एवं 2009 में संपादित उत्खनन से मुख्य रूप से भग्न मंदिरों की संरचनाएं अस्तित्व में आई हैं।

उत्खनित विष्णु मंदिर, 10 वीं सदी ईसवी

- **शिव मंदिर**– रेण नदी के तट पर स्थित शिव लिंग युक्त एक विशाल आकार के टीले पर उत्खनन से ताराकृति भू–न्यास योजना पर निर्मित मंदिर का अवशेष प्रकाश में आया है। उत्खनित मंदिर के विमान का जगती प्रस्तर निर्मित है और अधिष्ठान से शिखर पर्यंत उर्ध्व विन्यास पकाये गये ईटों द्वारा निर्मित था। परवर्ती काल में मंडप का विस्तार किया गया है। इस स्थल के उत्खनन से प्राप्त विविध स्थापत्य खंड, भग्न शैव द्वारपाल तथा गरूड़ युक्त सिरदल का मध्य भाग संरचना के काल निर्धारण की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। पश्चिमाभिमुख यह शिव मंदिर लगभग 8वीं सदी ईसवी में निर्मित है। दक्षिण कोसल में प्रचलित ताराकृति भू–न्यास योजना पर अधिष्ठान से शिखर पर्यन्त ईंटों के उर्ध्व विन्यास युक्त यह भारी–भरकम मंदिर निरंतर उपेक्षित होने से विशाल वृक्षों की अधिकता से ढह गया। इस परिसर अंतर्गत परवर्ती काल के निर्मित छोटे–छोटे भग्न मंदिरों की संरचनाएं झाड़ियों में दबे टीलों से अनावृत किए गए हैं।

उत्खनित शिव मंदिर, 8वीं सदी ईसवी

- **आदिनाथ टीला** – यह टीला विशाल वृक्ष से आच्छादित होने के कारण अत्यधिक विनष्ट स्थिति में था। यहां पर उत्खनन से परवर्ती काल में संरचित जगती प्रकाश में आई है। इस स्थल से प्राप्त लगभग 10 वीं सदी ईसवी के अभिलेख का भग्न टुकड़ा महत्वपूर्ण है। उत्खनन प्रमाण से यह स्पष्ट हुआ है कि इस टीले पर स्थापित आदिनाथ

उत्खनित विष्णु मंदिर, 10 वीं सदी ईसवी

प्रतिमा तथा अधिष्ठान अवशेष किसी अन्य टीले से लाकर यहां रखे गये हैं।

उत्खनन से प्राप्त विविध प्रतिमाएं

● **बड़का देउर** नामक क्षेत्र के उत्खनन से त्रिपुरी के कलचुरियों के काल में निर्मित भग्न मंदिरों की संरचनाएं अनावृत हुई हैं। इस समूह में विष्णु मंदिरों की प्रधानता है। ऊंची जगती पर निर्मित इन संरचनाओं के भू विन्यास में मंडप अंतराल तथा गर्भगृह प्रमुख है। विशालकाय जंगली वृक्षों की अधिकता से यहां के स्मारक अत्याधिक क्षत विक्षत स्थिति में प्राप्त हुये हैं। इस स्थल पर उत्खनन से विष्णु, वराह, वामन, सूर्य, नृसिंह, उमा–महेश्वर, विविध नायिकाएं, कृष्ण लीला से संबंधित फलक, द्वार शाखा, सिरदल, स्थापत्यखंड आदि कलावशेष प्राप्त हुए हैं। उपलब्ध शिल्पाकृतियों में क्षेत्रीय विशेषता दर्शनीय है। दक्षिण कोसलीय कला के साथ त्रिपुरी के कलचुरियों की कला परंपरा का परस्पर प्रभाव और विलय महेशपुर की कला अवशेषों में प्रदर्शित है। सौंदर्य व्यंजना, मौलिक कल्पना तथा संतुलित तालमान की दृष्टि से प्राप्त अवशेष जनजातीय अंचलों से ज्ञात अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर हैं।

नृसिंह, 8वीं सदी ईसवी

● **सर्वेक्षण–अन्वेषण–**

महेशपुर तथा रेण नदी के तटवर्ती क्षेत्र के सर्वेक्षण से प्राप्त प्रागैतिहासिक काल के विभिन्न पाषाण उपकरण इस अंचल में आदिमानवों के संचरण के साक्ष्य हैं। चर्ट, अगेट, क्वार्टज आदि कठोर पाषाण निर्मित नुकीले, धारदार, एक पार्श्वीय, द्वि–पार्श्वीय, सूक्ष्म पाषाण उपकरण आसपास बहुलता से प्राप्त हुये हैं। यहां के पर्यावरण में विद्यमान जैव विविधता, जल स्त्रोत और जन–जातीय संस्कृति में पुरातन युग की छाप शेष है। लक्ष्मणगढ़ के समीप प्राकृतिक गुफा रानूमाढ़ा भूगर्भीय नैसर्गिक संरचना है। इस गुफा में तीन प्रवेश द्वार हैं। प्रारंभ में यह गुफा आदिमानवों का आश्रय स्थल था। जल रिसाव के कारण यहां सदैव शीतलता बनी रहती है। इस गुफा के उपरी धरातल पर सूक्ष्म

विष्णु, 10वीं सदी ईसवी

विविध पाषाण उपकरण

पाषाण उपकरण फैले हुये हैं। लक्ष्मणगढ़ में ईंट और प्रस्तर से निर्मित विशाल भग्न मंदिर का टीला ज्ञात हुआ है। टीले के समीप ईंटों से चिनाई की गई प्राचीन कूप है। रेण नदी के दायें तट पर स्थित मोहनपुर ग्राम में आठवीं सदी ईसवी के प्राचीन आवासीय भवन (मठ) की नींव बची हुई है। महेशपुर स्थित सरोवर–रण सागर, भोज सागर, कूर्मिन तरई (कूर्म ताल) लोक संस्कृति के परिचायक हैं। महेशपुर में मंदिरों के निर्माण के लिए टांकीनारा नामक खदान से शिलाखंड काट–तराश कर लाये गये है। समानान्तर पंक्ति में शिलाखंडों के खनन किये जाने से यह खदान नाला के समान दिखाई देता है।

महेशपुर की कला संपदा का अल्पांश प्रकाश में लाया जा सका है तथा इसका अधिकांश भाग वन में समाया हुआ है। यहां के अनेक प्राचीन टीले, आवासीय भू–भाग तथा सरोवर वनांचल में लगभग 2 कि.मी. के क्षेत्र में फैले हैं। महेशपुर का प्राकृतिक सौंदर्य, पुरानिधि और जनजातीय संस्कृति पर्यटकों को सम्मोहित करता है। शैव, वैष्णव एवं जैन धर्म से संबंधित कलाकृतियां तत्कालीन धार्मिक स्थिति, तक्षण कौशल और मौलिक कल्पना के सुंदर उदाहरण हैं। इसके माध्यम से लोक जीवन में व्याप्त भक्तिधारा, शास्त्रीय बोध और शिल्पीय दक्षता का ज्ञान होता है । भागवत धर्म से संबंधित कृष्ण लीला युक्त पट्ट नाटकीयता से ओतप्रोत है। इन कलाकृतियों के माध्यम से श्रृंगार, परिधान, आभूषण एवं अन्य सांस्कृतिक पक्षों पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है। लौकिक प्रतिमाओं में शील, सौंदर्य तथा लावण्य दर्शनीय है। महेशपुर से प्राप्त अवशेष कला शैली की दृष्टि से शोधपरक हैं। सरगुजा जिले की पुरातत्वीय धरोहरों की श्रृंखला– रामगढ, डीपाडीह, हर्राटोला, कलचा, भदवाही और महेशपुर में विस्तृत है ।

नायक के नेत्र से कंकण निकालती नायिका

भारतीय कला के इतिहास में सरगुजा जिले के पुरातत्वीय धरोहर अध्ययन के लिए उत्खनन से ज्ञात नवीन पुरास्थल हैं। महेशपुर से उत्खनित पुरावैभव दक्षिण कोसल की स्थापत्य परंपरा के स्वर्णिम युग का एक नया अध्याय है। जन आस्था और पुरातन वैभव से संपन्न महेशपुर, पर्यटन के उल्लास से सुवासित जीवंत दर्शनीय स्थल है।

उमा-महेश्वर, 10वीं सदी ईसवी

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़

महेशपुर उत्खनन की उपलब्धियाँ दक्षिण कोसल की गौरवशाली स्थापत्य परंपरा को रेखांकित करती है। यहाँ से प्राप्त दुर्लभ कलात्मक प्रतिमाएँ भारतीय कला की अमूल्य धरोहर है। नैसर्गिक सौंदर्य और पुरातात्विक धरोहरों से समृद्ध यह स्थल पर्यटन के आकर्षण से भरपूर है। दक्षिण कोसल की कला-संस्कृति के अध्याय में विशेषकर प्रतिमा विज्ञान के क्षेत्र में महेशपुर की नई पहचान स्थापित होगी।

बृजमोहन अग्रवाल
मंत्री
संस्कृति एवं पर्यटन

पहुंच मार्ग

वायु मार्ग : रायपुर निकटस्थ विमानपत्तन है। यह दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, भुवनेश्वर, विशाखापट्टनम और नागपुर से नियमित विमान सेवा से जुड़ा हुआ है।

रेल मार्ग : हावड़ा–मुम्बई प्रमुख मार्ग पर स्थित बिलासपुर और रायपुर प्रमुख जंक्शन है। अंबिकापुर समीपस्थ रेल स्टेशन है।

सड़क मार्ग : रायपुर–बिलासपुर–अंबिकापुर मुख्य सड़क मार्ग पर नियमित बस सेवा उपलब्ध है। इस मार्ग पर स्थित उदयपुर कस्बा से महेशपुर तक वर्ष पर्यन्त जीप, कार चलने योग्य कच्चा सड़क मार्ग निर्मित है।

आवास सुविधा : निकटतम जिला मुख्यालय अंबिकापुर में आधुनिक सुविधाओं से युक्त लॉज, होटल के अतिरिक्त शासकीय विश्राम भवन तथा विश्राम गृह उपलब्ध हैं।

सम्पर्क

राजीव श्रीवास्तव, आयुक्त
संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व
छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर

दूरभाष : 0771-2537404, टेलीफैक्स : 0771-2234731
ई–मेल : deptt_culture@yahoo.co.in, deptt.culture@gmail.com
वेबसाईट : http.//cgculture.in

महेशपुर उत्खनन

उत्खनन निर्देशक : जी.एल. रायकवार, उपसंचालक

तीर्थंकर आदिनाथ, 10वीं सदी ईसवी